P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-9* May- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कामकाजी एवं गृहणी माताओं के किशोर किशोरियों के व्यवहार का अध्ययन

A study on Behavior of Adolescent of working and Non-working Mothers

Paper Submission: 00/00/2020, Date of Acceptance: 00/00/2020, Date of Publication: 00/00/2020

दिव्या दुबे
विभागाध्यक्ष
गृह विज्ञान विभाग,
अकलंक कॉलेज,
कोटा, राजस्थान, भारत

नीतू छिनीवाल
शोधार्थी,
गृह विज्ञान विभाग,
कैरियर पाइंट यूनिवर्सिटी,
कोटा, राजस्थान, भारत

प्रस्तुत शोध में कामकाजी व गृहणी माताओं के किशोर किशोरियों के व्यवहार का अध्ययन किया गया है। किशोरावस्था जीवन की प्रमुख अवस्था होती है। उसी अवस्था में किशोर किशोरियों में बहुत परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इन्हीं परिवर्तनों के कारण किशोर, किशोरियों का व्यवहार परिवर्तन भी होता है। उन्हें इनके स्वभाव, परिवर्तन के अनेक बदलते रूप इसी अवस्था में दिखाई देते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए कोटा की पांच तहसीलों के विभिन्न सीनियर सैकेण्ड़री स्कूलों के 1000 किशोर, किशोरियों का चयन किया गया जिनमें 500 किशोर, किशोरी कामकाजी माताओं के तथा 500 गृहणी माताओं के थे।

किशोर, किशोरियों के व्यवहार के अध्ययन के लिए किशोर व्यवहार मापनी का उपयोग किया गया। तथ्यों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन व टी. परीक्षण द्वारा किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि व्यवहार के ज्यादातर क्षेत्रों में गृहणी माताओं के किशोर किशोरियों का व्यवहार अधिक अच्छा पाया गया।

The objective of the proposed studies was to observe the behavior of adolescents of working and non-working mothers. Adolescents is a major stage of life at the same stage many changes are seen in boys and girls. Due to these changes the behavior of adolescents also change. They see their nature, many changing forms of in this stage. 1000 adolescent boys and girls from different senior secondary schools of five tehsils of Kota. Were selected for the study of which 500 adolescents were working mothers and 600 were non-working mothers. Adolescent behavior scales were used to study of adolescent behavior. Analysis of facts mean, standard derivation and T test was done by the result of study showed that in most areas of behavior. The behavior of adolescent girls of non-working mothers was found to be better.

मुख्य शब्द : कार्यकारी महिलाएं, गृहणी महिलाएं, किशोर/किशोरी व्यवहार।
Working woman, Non-working woman, Adolescent boy, Adolescent girl, behavior.

प्रस्तावना

मानव जीवन में किशोरावस्था सर्वाधिक विचलन वाली अवस्था है। इस अवस्था में बालक कभी तो आशाओं व सफलताओं के आसमान में सैर करता हैं तो कभी वह निराशा की गहरी खाई में समा जाता है। किशोरावस्था मानव जीवन की सबसे सुन्दर एवं स्वर्णिम अवस्था है इस अवस्था में जीवन तरंग अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुंच जाते हैं। किशोरावस्था के अन्त तक किशोर–किशोरियों का शारीरिक एवं मानसिक विकास पूर्ण हो जाता है। यह अवस्था बाल्यवस्था के आने तथा युवावस्था के प्रारम्भ के मध्य की अवस्था है, इस अवस्था को ″क्रमिक अवस्था″ तथा ″संक्रमण काल की अवस्था″ भी कहा जाता है। क्योंकि यह अवस्था ″13 से 19 वर्ष″ तक की मानी जाती हैं अतः इसे वयः सन्धि की अवस्था भी कहते है। जी स्टानले हॉल ने इस ″तूफान एवं तनाव″ की संज्ञा भी दी है।

किशोरावस्था अर्थ एवं परिभाषा

किशोरावस्था अंग्रेजी भाषा के "Adolescence" शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जिसका अर्थ होता हैं ″परिपक्वता की ओर बढ़ना″ जब बालक का शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक संवेगात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होता है। इन्हीं

परिवर्तना के कारण किशोर के व्यवहार में असामान्यताः उत्पन्न होने लगती है। उसमें अस्थिरता, सांवेगिकता, अनिश्चितता आदि का प्रावल्य रहता है।

आरजनेक के अनुसार "किशोरावस्था वयः सन्धि के बाद की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति में आत्म उत्तरदायित्व का स्थापन होता है।"

जब बालक किशोरावस्था में कदम रखता है तो बालक शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक रूप से कई परिवर्तन होते है जिसका प्रभाव बालक के व्यवहार पर भी पड़ता है। इस उम्र के बालकों को मानसिक स्थिति शीघ्रता से बदलती है, बालकों का अपने संवेगो पर नियन्त्रण करना कठिन हो जाता है उसे बात–बात पर क्रोध आना, चिड़चिड़ापन रहना सिर्फ अपनी ही बात को सही मानना आदि। इस अवस्था में बालकों को अपने माता–पिता या अन्य परिवार के लोगों की बाते अच्छी नहीं लगती या उनके विचार अपने बड़ों के विचार से मेल नहीं खाते, कुछ किशोर माता–पिता के नियन्त्रण को अस्वीकार कर देते है। कुछ माता–पिता के दबाव के कारण नियन्त्रण स्वीकार कर तो लेते है, परन्तु छिपे–छिपे नियन्त्रण के प्रति विद्रोह करते है। किशोर किशोरियों का अपने हम उम्र दोस्तों से ज्यादा लगाव हो जाता है। उन्हें अधिक से अधिक समय अपने दोस्तों के साथ बिताना पसन्द आता है, उसमें ध्यान की अवधारणा, कल्पना, दिवास्वप्न आदि शक्तियां अधिक प्रखर हो जाती है। बच्चे मन ही मन किसी अभिनेता का अनुकरण करने लगता है। वह उसे ही अपना आदर्श समझने लगता हैं तो उसी की तरह हाव–भाव तथा दिखने की कोशिश करने लगता है। इसे वीर–पूजा ;भ्मतव ूवतीपचद्ध कहते है। इस अवस्था के बालक स्वतन्त्रता अधिक पसन्द करते है तथा समूह में रहना अधिक पसन्दर करते है। इसी समय बच्चों में सिगरेट पीना, वस्त्र का चुनाव, गलत संगत आदि से बच्चों का व्यवहार बहुत प्रभावित होता है। इस कारण इसी अवस्था को तूफान व तनाव की अवस्था कहते है, ज्यादातर तनाव दो कारणों से उत्पन्न होते है। प्रथम तेजी से होता हुआ शारीरिक विकास, अचानक होते हुए शारीरिक परिवर्तन। द्वितीय माता–पिता के व्यवहार से उत्पन्न तनाव वास्तव में इस अवस्था से संवेगों पर नियन्त्रण करना कठिन हो जाता है। किशोर के समक्ष यह समस्या रहती है।किशोर के समक्ष यह समस्या रहती हैं कि वह अपनी आयु के बालकों की प्रभुता को मान्यता दे या माता–पिता की प्रभुता को स्वीकार करे। इस अवस्था में तीव्र किन्तु अनियमित शारीरिक अभिवृद्धि व लैंगिक परिपक्वता के कारण शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की बहुत सी समस्याओं से किशोर व किशोरी अपने आप को असुरक्षित समझने लगते है तथा उन्हें स्वयं को लेकर बहुत सी चिन्ताऐं घेर लेती है।

ऐसी स्थिति में बालकों को सबसे ज्यादा प्रेम, सहानुभूति की आवश्यकता होती है, जो उसे माता–पिता शिक्षक या अन्य परिवार के लोगों से मिलती हैं। बालक ईश्वर की सर्वोतम कृति है। उसके विकास के लिए घर में माता–पिता बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण की पहली पाठशाला है। उसमें भी माँ की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। अगर माता–पिता अपन बालक से प्रेम करते है, उसके कार्य में रूचि लेते है व उसकी इच्छाओं का सम्मान करते हैं तो बालक के उत्तरदायित्व सहयोग आदि गुणों का विकास होगा अन्यथा वह सभी नैतिक मूल्यों को ताक में रखकर समाज विरोधी बन जाएगा।

किशोर के विकास में माँ की भूमिका

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में माता–पिता के त्याग, धैर्य, परिश्रम वे सूत्र है जिनके द्वारा उनमें आत्मविश्वास भरा जा सकता है, बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण की पहली कार्यशाला उसका परिवार हैं जिसमें उसकी माँ की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। माता–पिता के आपसी सम्बंध व व्यवहार भी बालकों को सहज रूप से प्रवाहित करते है वही उनके अपनी तनावपूर्ण टूटते रिश्ते उनके विकास को न केवल अवरूद्ध कर देते है वरन् उनके जीवन को कुंठाओं से भर देते है। अतः इस अवस्था में किशोर विभिन्न बदलावों से गुजरते है। अतः माता–पिता को चाहिए कि किशोरों की हर समस्या का समझदारी व धैर्य के साथ सुनकर उसका समाधान करे। चूंकि किशोरों का ज्यादा समय घर में अपनी माताओं के साथ गुजरता है तथा माताऐं भी उनकी हर समस्या, जिज्ञासा को समझकर उनका समाधान तय करती है।

घर पर रहने वाली माताएँ या गृहणी महिलाऐं चूंकि घर पर रहती हैं तो वे किशोरों की हर आवश्यकता को तुरन्त पूरा करती है, उनके कार्यों को भी वे ही करती है इसमें बालक–बालिकाएं हर कार्य के लिए माताओं पर निर्भर रहते है व स्वच्छन्द जीवन जीने के आदि हो जाते हैं, इससे जब बच्चे किशोरावस्था में आते है तो यही आदतें उनके कार्यों को भी वे ही करती है इसमें बालक–बालिकाएं हर कार्य के लिए माताओं पर निर्भर रहते है व स्वच्छन्द जीवन जीने के आदि हो जाते हैं। इससे जब बच्चे किशोरावस्था में आते है तो यही आदते उनके व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। वे समयानुसार आत्मनिर्भर नहीं बन पाते, कुछ गृहणी माताएँ जो किशोरों के बदलते व्यवहार को समझकर उन्हे सही मार्गदर्शन करती है तो किशोर इस अवस्था में भी भ्रमित नहीं होते है तथा परिस्थिति अनुसार समायोजन कर लेते है तथा उन्हे व्यवहार सम्बन्धी दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ता।

इसके विपरित कामकाजी महिलाएं घर एवं बाहर दोनों स्थानों पर समायोजन करने का भरपूर प्रयास करती है, परन्तु कभी–कभी इसमें असफल भी हो जाती है। यदि महिला के कार्यशील होने पर उसका परिवार अवांछनीय रूप से प्रभावित होता है तो इसका सर्वाधिक प्रभाव उनकी संतानों पर पड़ता है। माता के सान्निध्य के अभाव में वे उनके स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन से वंचित हो जाते है जिसका प्रभाव उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है, माताऐं जब समयाभाव के कारण बच्चों की छोटी–छोटी समस्याओं पर ध्यान नहीं दे पाती जिसमें बच्चे स्वयं को हीन व तिस्कृत समझने लगते है। कुछ कामकाजी माताऐं स्थिति को संभालने में सफल हो जाती है तो उनकी संताने सामंजस्य स्थापित कर लेती है, उन माताओं के बच्चे हर कार्य स्वयं करते है तथा छोटी–छोटी समस्याओं का समाधान भी स्वयं करने की कोशिश करते है। इन बच्चों में

आत्मनिर्भरता का गुण जल्दी विकसित हो जाता है तथा वे हर परिस्थिति में अपने आप को समायोजित करने का प्रयास करते है।

शोध के उद्देश्य

कार्यशील तथा गृहणी माताओं के किशोर बालक तथा बालिकाओं के व्यवहार का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. कार्यशील तथा गृहणी माताओं के किशोर बालक–बालिकाओं के व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. कार्यशील तथा गृहणी माताओं के किशोर बालकों के व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. कार्यशील तथा गृहणी माताओं की किशोर बालिकाओं के व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

जोबसन सी. मृदुला (2020)[10]

इन्होनें "किशोरों में भावनात्मक परिपक्वता व इसका महत्व" पर अध्ययन किया। इनके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोरों में भावनात्मक परिपक्वता व उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों के स्तर को निर्धारण करना है। इसके लिए तमिलनाडु के दक्षिणी जिले के हायर सैकेण्डरी स्कूलों के 100 किशोरों को लिया गया, जिनकी आयु 16–18 वर्ष थी, जिसमें 53 किशोरियां तथा 47 लड़के थे। डेटा संग्रहण के लिए सिंह व भार्गव की परिपक्वता स्केल का उपयोग किया गया।

निष्कर्षों में पाया गया कि 74 प्रतिशत किशोर–किशोरियों भावनात्मक रूप से अधिक अपरिक्व पाये गये, जबकि 16 प्रतिशत किशोर–किशोरियां भावनात्मक रूप से परिपक्व थे।

डॉ. कुमार नीरज (2019)[11]

"कामकाजी व गैर कामकाजी माताओं के किशोर बच्चों की मनोसामाजिक समस्याओं का अध्ययन" शीर्षक पर अध्ययन किया।

अध्ययन के लिए उत्तरप्रदेश के जिले जी.बी. नगर के दो निजी स्कूल के 130 किशोर बच्चे लिए। जिनकी आयु 14–17 वर्ष थी। डाटा संग्रहण के लिए स्वनिर्मित समस्या जांच सूची का उपयोग किया गया, यह चेकलिस्ट डवदमल च्तवइसमउ बैमबासपेजपर आधारित थी तथा इसमें 11 क्षेत्रों में समस्याओं के जांच के लिए प्रश्न थे, जिसमें स्वास्थ्य, व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक संबंध, होम एंड फैमिली तथा एडजस्टमेन्ट आदि थे।

अध्ययन के परिणामों में पाया कि कामकाजी व गृहणी माताओं के किशोर बच्चों की मनोसामाजिक समस्या के बीच महत्वूपर्ण अंतर मौजूद है। गैर कामकाजी माताओं के किशोर बच्चों को आदि मनोसामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

खान महमूद अहमद, सैयद अमरीन (2018)[12]

यह अध्ययन कार्यशील व गृहणी माताओं के बच्चों में तनाव व मुकाबला रणनीतियों का अध्ययन करने के लिए किया गया। डाटा संग्रहण के लिए बड़गाम जिला, कश्मीर के उच्च व उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 200 बच्चे चुने गये जिसमें 100 कामकाजी माता के तथा 100 गृहणी माताओं के थे। तनाव की जांच के लिए ब्वीद मजण् स ;1983द्ध प्रश्नावली तथा मुकाबला रणनीति के लिए थ्वसाउंद दक द्रंतने ;1988द्ध स्केल उपयोग में लिया गया। अध्ययन के निष्कर्षों में पाया गया कि कामकाजी व गैर कामकाजी माताओं के बच्चे गैर कामकाजी माताओं के बच्चों की तुलना में अधिक तनाव में होते हैं। गृहणी माताओं के बच्चे समस्याओं का समझने, वैकल्पिक समाधान उत्पन्न करने तथा चुने हुए विकल्प के सही–गलत पर विचार करते हैं, जबकि कामकाजी माताओं के बच्चे समस्या का सामना करने से बचते हैं।

परिसीमन

इस अध्ययन के लिएकोटा जिले की पांच तहसीलों के विभिन्नसी. सै. विद्यालय के किशोर, किशारियों का चयन किया गया।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श

सौउद्देश्य यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा पांच तहसीलों के विभिन्न सी. सै. विद्यालयों से 1000 किशोर/किशोरियों का चयन किया गया। जिनसे 500 किशोर/किशोरियों कामकाजी माता के तथा 500 किशोर/किशोरियों गृहणी माताओं के थे।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोधार्थी ने शोध हेतु किशोर/किशोरियों का व्यवहार के अध्ययन के लिए स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया।

तथ्यों का विश्लेषण

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन
3. टी. परीक्षण

परिकल्पना – 1 कार्यशील तथा गृहणी माताओं के किशोर बालक–बालिकाओं के व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका– 1

कार्यशील तथा गृहणी माताओं के बालक एवं बालिकाओं के व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

	N	Mean	S.D.	T – Value	निष्कर्ष
बालकों का कुल व्यवहार	500	55.75	4.15		सार्थक अन्तर नहीं है
बालिकाओं का कुल व्यवहार	500	55.94	4.15	0.709	

df = (N1 + N2) – 2 = (500 + 500) – 2 = 998 सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीमान = 1.962
सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीमान = 2.581

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-9* May- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

निष्कर्ष

इस परीक्षण के परिणाम से निष्कर्ष निकलता है कि कार्यशैली व गृहणी माताओं के बालक एवं बालिकाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

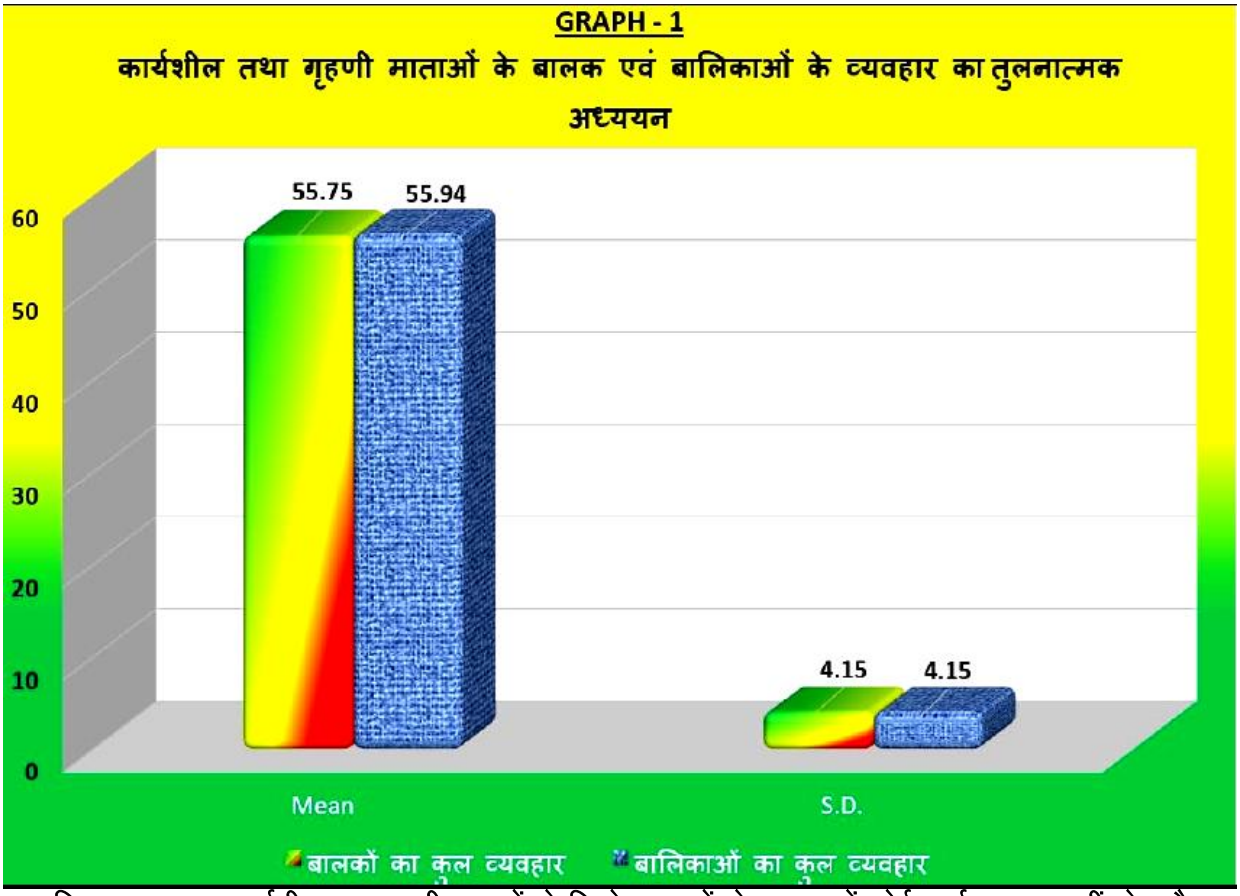

परिकल्पना – 2 कार्यशील तथा गृहणी माताओं के किशोर बालकों के व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका –2

कार्यशील तथा गृहणी माताओं के किशोर बालकों के व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

	N	Mean	S.D.	T – Value	निष्कर्ष
गृहणी माताओं के बालकों का व्यवहार	250	55.68	4.34		सार्थक अन्तर नहीं है
कार्यशील माताओं के बालकों का व्यवहार	250	55.82	3.96	0.355	

df = (N1 + N2) – 2 = (250 + 250) – 2 = 498 सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीमान = 1.965
सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीमान = 2.586

निष्कर्ष

इस परीक्षण के परिणाम से निष्कर्ष निकलता है कि गृहणी माताओं व कार्यशील माताओं के बालकों के व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

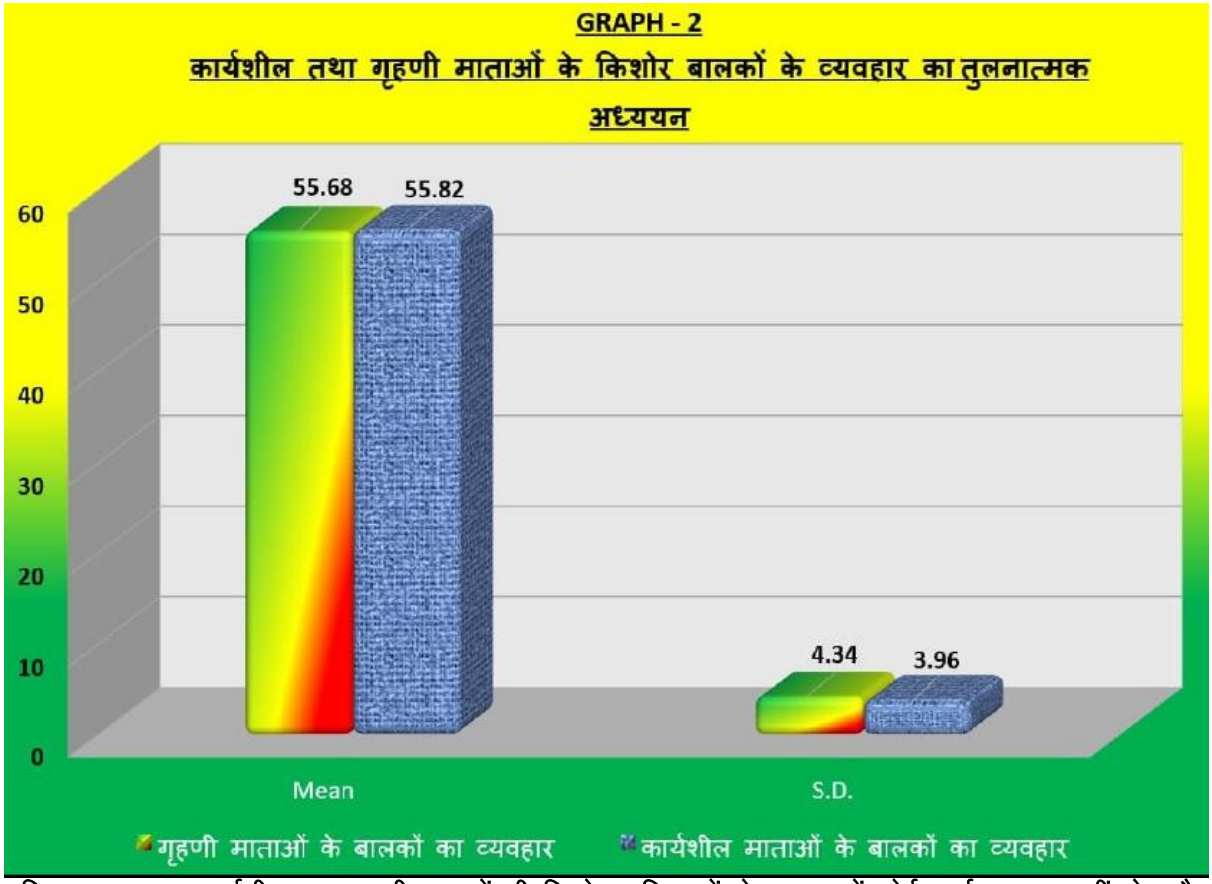

परिकल्पना –3 कार्यशील तथा गृहणी माताओं की किशोर बालिकाओं के व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका –3

कार्यशील तथा गृहणी माताओं के किशोर बालिकाओं के व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन

	N	Mean	S.D.	T – Value	निष्कर्ष
गृहणी माताओं के बालिकाओं का व्यवहार	250	55.96	4.62	0.108	सार्थक अन्तर नहीं है
कार्यशील माताओं के बालिकाओं का व्यवहार	250	55.92	3.62		

df = (N1 + N2) – 2 = (250 + 250) – 2 = 498
सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीमान त्र 1.965
सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीमान त्र 2.586

निष्कर्ष

इस परीक्षण के परिणाम से निष्कर्ष निकलता है कि गृहणी माताओं व कार्यशील माताओं की बालिकाओं के व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

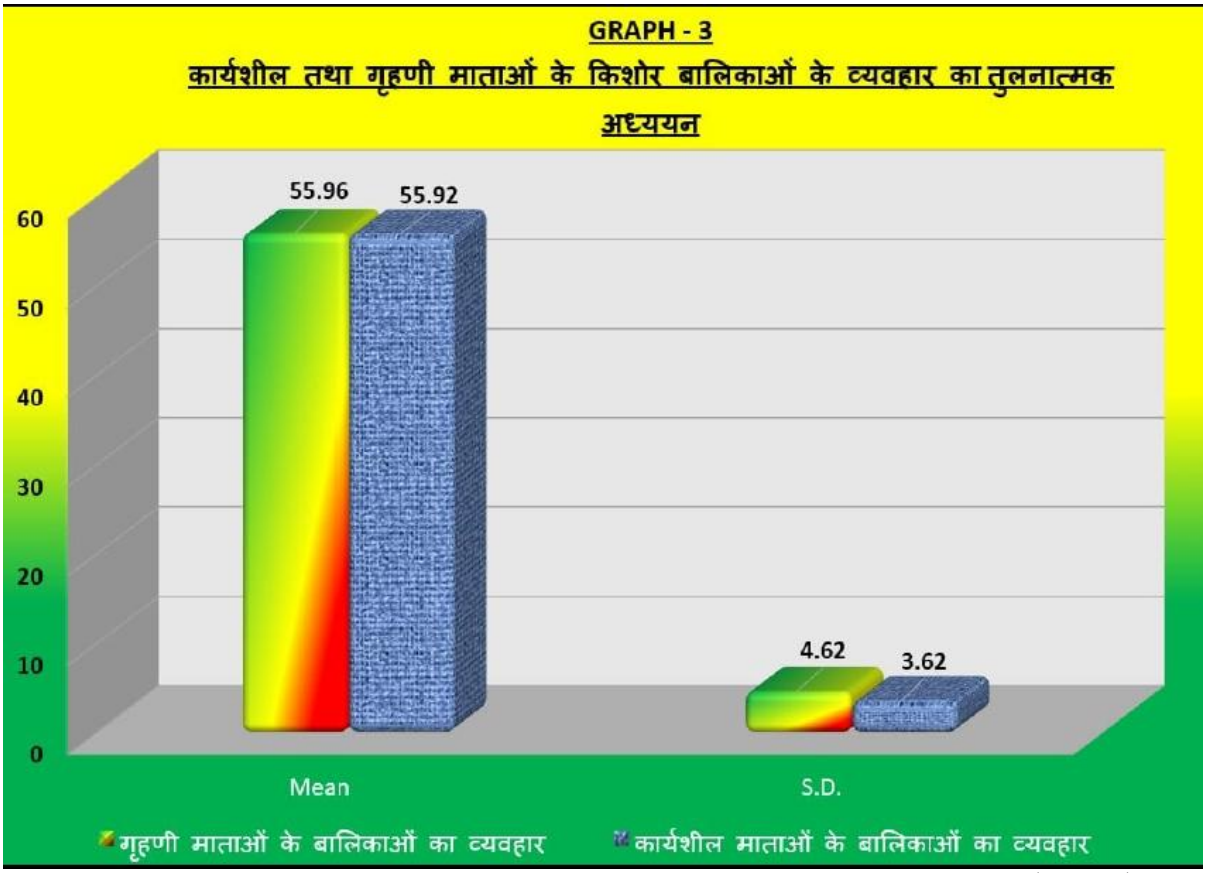

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा परिणाम इस बात की पुष्टि करते है कि कामकाजी व गृहणी दोनों प्रकार की महिलाएं अपने बच्चों की देखभाल उचित प्रकार से करती है। जिन बालकों की माताएं कामकाजी होती है, उनके व्यवहार तथा गृहणी माताओं के बालकों के व्यवहार में कोई अन्तर नहीं होता।

चूंकि बालक – बालिकाएं देश के भावी कर्णाधार है। देश का भविष्य है। अतः कामकाजी व गृहणी दोनों प्रकार की माताओं को बच्चों के लिए समय निकालना चाहिए, उनका उचित मार्गदर्शन करना चाहिए जिससे बालकों के व्यवहार के उच्च प्रतिमान स्थापित किए जा सके। इसके साथ ही परिवार का वातावरणअच्छा होना चाहिए। माता – पिता का तथा अध्यापकों का बालकों के साथ मित्रवत् व्यवहार होना चाहिए, जिससे बालक – बालिकाएं अपनी किसी भी समस्या को बनाकर उसका समाधान कर ले, जिससे उन्हें किसी भी प्रकार का तनाव नहीं होगा, उनका व्यवहार संयमित रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Singh Dr. Vrinda, Human Development and Family Relations, सिंह, डॉ. वृन्दा, मानव विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध, पंचशील प्रकाशन, जयुपर पेज नं. 574 & 590 Panchshila Publisher, Jaipur.*
2. *पारीक, डॉ. आशा, बाल विकास मनोविज्ञान, पेज नं. 174 & 176 Pareek Dr. Asha, Child Development Psychology Page No.: 174 – 176*
3. *भाटिया, निर्मल शिक्षा में मनोविज्ञान के सिद्धान्त व प्रविधियाँ, पेज नं. 202 & 205 Bhatia, Nirmal, Principal and Method of Psychology in Education, Page No.: 202 – 205.*
4. *शर्मा, गंगाराम, भार्गव विवेक, शिक्षा मनोविज्ञान, एच. पी. भार्गव प्रकाशन, आगरा, पेज नं. 55 & 60 Sharma, Gangaram, Bhargav Vivek, Education Psychology, Jobson C. Mridula (2020): Emotional Maturity among adolescents and its important, Indian Journal of Mental Health 2020 i 7 (1) Page No.: 35 – 41*
5. *Dr. Kumar Neeraj (2019): Psycho – Social problems of adolescent children of working and non-working mothers. International Journal of Research and Analytical Review. Volume 6, Issued on 2 June 2019. EISSN 2348 – 1269, Page No.: 857X – 862X*
6. *Khan Mahmood Ahmad, Saiyad Amrin (2018) Children of working and Non-working Mothers their stress and coping strategies. H.B. JAP Volume (13) 2018 ISSN – 0975 – 6582, Page No.: 150 – 169.*